रवि की कोणों की दुनिया

Mukesh Saini

रवि अपनी गणित की किताब के सामने उदास बैठा है। उसे को
बिलकुल समझ नहीं आ रहे थे। उसकी पेंसिल उसके हाथ से छूट ग
और वह सोचने लगा कि काश गणित थोड़ी मज़ेदार होती।

तभी अचानक उसकी मेज़ पर एक चमकता हुआ जादुई चाँदा (protractor) प्रकट होता है। चाँदा अपनी सुनहरी रोशनी से पूरे कम को रोशन कर देता है। रवि हैरान होकर उसे देखता है।

जादुई चाँदा बड़ा होने लगता है और रवि को अपने अंदर खींच ले है। रवि देखता है कि वह अब एक ऐसी दुनिया में है जहाँ सब कुछ रेख और कोणों से बना है। रंग-बिरंगी रेखाएं हवा में तैर रही हैं।

उसे एक छोटा, फुर्तीला कोण मिलता है जो हमेशा छोटा और नुकीला रहता है। यह न्यून कोण है, जो हमेशा 90 डिग्री से कम होता वह छोटे-छोटे कदम उठाता है और रवि के चारों ओर नाचता है।

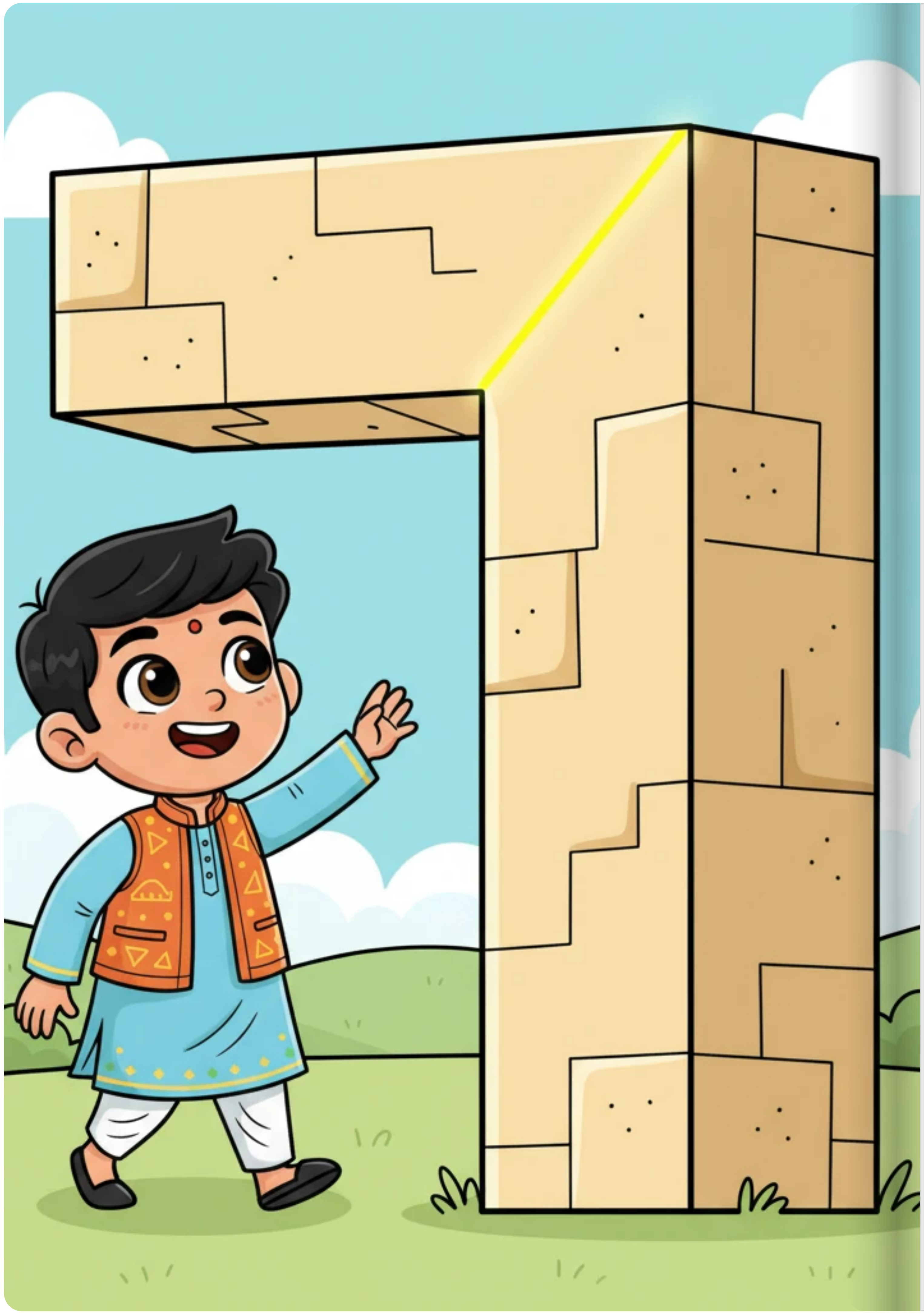

आगे चलकर रवि एक मज़बूत और स्थिर कोण से मिलता है। य समकोण है, जो बिल्कुल 90 डिग्री का होता है और किसी इमारत कि नींव जैसा दिखता है। यह कोण गर्व से सीधा खड़ा है।

फिर रवि एक बड़े, खुले दिल वाले कोण से मिलता है। यह अधि कोण है, जो 90 डिग्री से बड़ा लेकिन 180 डिग्री से छोटा होता है। य कोण अपनी बाहें फैलाकर रवि का स्वागत करता है, जैसे गले लगाने व तैयार हो।

रवि एक सीधी सड़क पर चलता है जहाँ उसे एक सपाट कोण मिलता है। यह सरल कोण है, जो बिल्कुल 180 डिग्री का होता है औ एक सीधी रेखा बनाता है। यह कोण शांत और स्थिर दिखता है।

फिर रवि एक ऐसे कोण से मिलता है जो अपनी पीठ पीछे मुड़ा हुआ है। यह प्रतिवर्ती कोण है, जो 180 डिग्री से बड़ा लेकिन 360 डि से छोटा होता है। यह कोण थोड़ा शरारती लग रहा है, जैसे कुछ छिपा हो।

अंत में, रवि एक घूमने वाले कोण से मिलता है जो एक पूरा चक्
लगाता है। यह पूर्ण कोण है, जो बिल्कुल 360 डिग्री का होता है। य
कोण खुशी से घूम रहा है, जैसे एक लट्टू।

जादुई चाँदा रवि को वापस उसकी मेज़ पर ले आता है। अब रवि को गणित की किताब उतनी बोरिंग नहीं लगती। वह मुस्कुराता है और अपनी पेंसिल उठाकर आत्मविश्वास से कोणों के सवालों को हल करने लगता है।